الأربعين

अल् अरबईन

इमाम नववी की जमाअ़ की हूई चालीस ह़दीसें

दीन के मुख़्तलिफ़ शोअ़बों से मुतअ़ल्लिक़ जामेअ़ और बुनयादी ह़दीसों का एक मुख़्तसर मज्मूआ़

तालीफ़
अबू ज़ैद ज़मीर

islamiclectures.net | islamicpdfs.net | abuzaidzameer.com

الأَرْبَعُونَ النَّوَوِيَّةُ

من الأحاديث الصحيحة النبوية

इमाम नववी की जमा की हुई

चालीस हदीसें

दीन के बुनियादी अहकाम व आदाब से मुताल्लिक अहादीस का
एक मुख़्तसर मजमूआ

अबू ज़ैद ज़मीर

फिहरिस्त

1.	आमाल का दार्वमदार निय्यतों पर है	5
2.	इस्लाम, ईमान और एहसान का बयान	6
3.	इस्लाम की बुनियादें	8
4.	इंसान की तख़लीक़ और तक़दीर	9
5.	अमल की कबूलियत का क़ायदा और बिदअत की बुराई	10
6.	हलाल व हराम के सिलसिले में तक़वा का एहतेमाम	11
7.	दीन खैर ख्वाही का नाम है	12
8.	इस्लाम में दाख़िला और जान व माल की हुरमत	13
9.	नबी ﷺ के हुक्म और मुमानअत (मना) में फर्मांबर्दारी	14
10.	हलाल कमाई और क़बूलियते दुआ	15
11.	मशकूक चीज़ से परहेज़	16
12.	गैर मक़सूद चीज़ों से परहेज़ करना	17
13.	दूसरों से सुलूक का पैमाना	18
14.	क़त्ल की हुरमत और इस्लामी हुदूद	19
15.	ईमान और इस्लामी अख़लाक़ में ताल्लुक	20
16.	गुस्से से परहेज़ करना	21
17.	एहसान की फ़ज़ीलत	22
18.	तक़वा और गुनाहों का कफ्फारा	23
19.	अल्लाह पर तवक्कुल और अकीदा ए क़ज़ा व क़दर	24
20.	हया की अहमियत	25
21.	ईमान और इस्तिकामत की अहमियत	28
22.	फ़राइज़ की कामिल अदाएगी पर जन्नत का वादा	29
23.	आमाल और उन के असरात	30
24.	अल्लाह की अज़मत और इंसान की मोहताजी	31
25.	नेकी के रास्तों की कसरत	33
26.	सदक़े का मक़ाम और उस की सूरतें	34
27.	इंसान के दिल पर नेकी और गुनाह के असरात	35
28.	इत्तेबा ए सुन्नत की अहम्मिय्यत और बिदअत का अंजाम	37
29.	ज़बान की हिफाज़त	38
30.	इस्लाम में हलाल व हराम का काएदा	40
31.	ज़ोह्द की फ़ज़ीलत	41
32.	दूसरों को तकलीफ देने की मुमानअत	42
33.	हुक़ूक के सिलसिले में दावे के साथ दलील की ज़रुरत	43
34.	बुराइयों को रोकने की कोशिश और उस के मरातिब	44
35.	मुसलमान के साथ अच्छे सुलूक की अहम्मिय्यत	45

36.	दीन का इल्म सीखने और सिखाने की फ़ज़ीलत	46
37.	नेकी और गुनाह के सिलसिले में अल्लाह का फ़ज़ल और अदल	47
38.	विलायत का हुसूल और उसके लवाज़मात	48
39.	इस्लामी अहकाम में इंसानी मजबूरियों की रिआयत	49
40.	दुनियां में रह कर आखिरत की फ़िक्र और तय्यारी करना	50
41.	अपनी ख्वाहिशात को शरीअत के ताबे करना	51
42.	अल्लाह की रहमत और गुनाहों की मग्फ़िरत	52

1. आमाल का दार्वमदार निय्यतों पर है

عَنْ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ أَبِي حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ ﷺ قَالَ: سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: إنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ لِدُنْيَا يُصِيبُهَا أَوْ امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا فَهِجْرَتُهُ إلَى مَا هَاجَرَ إلَيْهِ.

رَوَاهُ إمَامَا الْمُحَدِّثِينَ أَبُو عَبْدِ اللهِ مُحَمَّدُ بنُ إسْمَاعِيل بن إبْرَاهِيم بن الْمُغِيرَة بن بَرْدِزبَه الْبُخَارِيُّ الْجُعْفِيُّ [رقم:١]، وَأَبُو الْحُسَيْنِ مُسْلِمٌ بنُ الْحَجَّاج بن مُسْلِم الْقُشَيْرِيُّ النَّيْسَابُورِيُّ [رقم:١٩٠٧] رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي "صَحِيحَيْهِمَا" اللذِينِ هُمَا أَصَحُّ الْكُتُبِ الْمُصَنَّفَةِ. [1]

अमीरुल मोमिनीन अबू हफ़्स उमर बिन खत्ताब ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को यूँ फ़रमाते सुना: आमाल का मदार निय्यतों पर है, और हर शख़्स वही पाएगा जिस की उस ने निय्यत की| लिहाज़ा जिस की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की तरफ़ थी तो उस की हिजरत वाकई अल्लाह और उस के रसूल ही की तरफ़ है, और जिस की हिजरत दुनिया की तरफ़ थी कि उसे हासिल करे या किसी औरत की तरफ़ थी कि उस से निकाह करे तो ऐसे शख़्स की हिजरत उसी चीज़ की तरफ़ है जिस की तरफ़ उस ने हिजरत की|

इस हदीस को हदीस के दोनों इमामों अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुगीरह बिन बर्दिज़बह बुख़ारी जुअफ़ी ने, और अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज बिन मुस्लिम कुशैरी नीशापूरी ने अपनी सहीहैन में रिवायत किया है, ये दोनों किताबें(हदीस की) तमाम किताबों में सब से सहीह(यानी मोअत्बर) किताबें हैं|

[1] **صحيح البخاري**: بدع الوحي ١، كتاب الإيمان ٥٤، العتق ٢٥٢٩، كتاب مناقب الإنصار ٣٨٩٨، كتاب النكاح ٥٠٧٠، كتاب الأيمان والنذور ٦٦٨٩، كتاب الحيل ٦٩٥٣.

صحيح مسلم: كتاب الإمارة ١٥٥ – (١٩٠٧)

2. इस्लाम, ईमान और एहसान का बयान

عَنْ عُمَرَ ﷺ أَيْضًا قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ إِذْ طَلَعَ عَلَيْنَا رَجُلٌ شَدِيدُ بَيَاضِ الثِّيَابِ شَدِيدُ سَوَادِ الشَّعْرِ لَا يُرَى عَلَيْهِ أَثَرُ السَّفَرِ وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ حَتَّى جَلَسَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَأَسْنَدَ رُكْبَتَيْهِ إِلَى رُكْبَتَيْهِ وَوَضَعَ كَفَّيْهِ عَلَى فَخْذَيْهِ وَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَخْبِرْنِي عَنْ الْإِسْلَامِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : الْإِسْلَامُ أَنْ تَشْهَدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَتُقِيمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَتَصُومَ رَمَضَانَ وَتَحُجَّ الْبَيْتَ إِنْ اسْتَطَعْت إِلَيْهِ سَبِيلًا. قَالَ: صَدَقْت. فَعَجِبْنَا لَهُ يَسْأَلُهُ وَيُصَدِّقُهُ! قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ الْإِيمَانِ. قَالَ: أَنْ تُؤْمِنَ بِاَللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَيْرِهِ وَشَرِّهِ قَالَ: صَدَقْت. قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ الْإِحْسَانِ. قَالَ: أَنْ تَعْبُدَ اللَّهَ كَأَنَّك تَرَاهُ فَإِنْ لَمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَإِنَّهُ يَرَاك قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ السَّاعَةِ قَالَ: مَا الْمَسْئُولُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنْ السَّائِلِ قَالَ: فَأَخْبِرْنِي عَنْ أَمَارَاتِهَا؟ قَالَ: أَنْ تَلِدَ الْأَمَةُ رَبَّتَهَا وَأَنْ تَرَى الْحُفَاةَ الْعُرَاةَ الْعَالَةَ رِعَاءَ الشَّاءِ يَتَطَاوَلُونَ فِي الْبُنْيَانِ ثُمَّ انْطَلَقَ، فَلَبِثْنَا مَلِيًّا ثُمَّ قَالَ: يَا عُمَرُ أَتَدْرِي مَنْ السَّائِلُ؟ قَلَتْ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّهُ جِبْرِيلُ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِينَكُمْ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

हज़रत उमरﷺ ही से रिवायत है फ़रमाते हैं, एक दिन हम अल्लाह के रसूलﷺ के पास बैठे हुए थे कि एक शख़्स आया, जिस का लिबास निहायत ही सुफ़ैद था, बाल बिलकुल काले थे, उस पर सफ़र का कोई असर ना था और हम में से कोई उसे पहचानता भी ना था| यहाँ तक कि वो आ कर नबीﷺ के पास बैठ गया, अपने घुटने आप के घुटनों से लगा दिए और दोनों हथेलियां रानों पर रख

[1] مسلم: كتاب الإيمان: ١ - (٨)

दीं और कहा: ऐ मुहम्मद, मुझे इस्लाम के बारे में बताइये? इस पर अल्लाह के रसूलﷺ ने फ़रमाया: इस्लाम ये है कि तू इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ)अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ काएम करे, ज़कात अदा करे, रमज़ान के रोज़े रखे और अगर इस्तिताअत हो तो अल्लाह के घर का हज करे| उस ने कहा: आप ने सच कहा| उस की इस बात पर हमे बड़ा ताज्जुब हुवा की खुद ही पूछता है और खुद ही तसदीक भी करता है| फिर उस ने कहा: मुझे ईमान के बारे में बताइये? आपﷺ ने फ़रमाया: (ईमान ये है) कि तू अल्लाह पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की किताबों पर, उस के रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर ईमान लाए और तक़दीर की भलाई और बुराई पर ईमान लाए| उस ने कहा: आप ने सच कहा| फिर कहा: मुझे एहसान के बारे में बताइये? आपﷺ ने फ़रमाया: (एहसान ये है) कि तू अल्लाह की इबादत इस तरह करे कि गोया तू उसे देख रहा है, और अगर तू उसे नहीं देखता तो वो तो तुझे देख ही रहा है| उस ने कहा: मुझे कियामत के (वक़्त) के बारे में बताइये? आप ने फ़रमाया: जिस से पूछा गया है वो उसके बारे में पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता| उस ने कहा: मुझे उस की निशानियां ही बता दीजिए? आप ने फ़रमाया: (उस की निशानियों में से एक निशानी ये है कि) बांदी अपनी मल्किन को जनम देगी, और तू नंगे पाँव, कपड़ों से महरूम, बकरियां चराने वालों को देखेगा कि वो ऊँची ऊँची इमारतों फ़ख़र कर रहे हैं| इस के बाद वो शख़्स चला गया, और मैं काफ़ी देर तक बैठा रहा| अल्लाह के नबीﷺ ने मुझ से कहा| ऐ उमर, जानते हो ये सवालात पूछने वाला कौन थ? मैं ने कहा: अल्लाह और उस का रसूल ही बेहतर जानते हैं| आप ने फ़रमाया: ये जिबरील थे, तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने के लिए आए थे|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

3. इस्लाम की बुनियादें

عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ وَحَجِّ الْبَيْتِ وَصَوْمِ رَمَضَانَ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू अब्दुर रहमान उमर बिन खत्ताब ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को फ़रमाते सुना: इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है| इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ क़ाएम करना, (अल्लाह के) घर का हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: كتاب الإيمان ٨ – صحيح مسلم: كتاب الإيمان ٢١ – (١٦)

4. इंसान की तख़लीक़ और तक़दीर

عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ ﷺ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ – وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ–: إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ خَلْقُهُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا نُطْفَةً ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ يُرْسَلُ إِلَيْهِ الْمَلَكُ فَيَنْفُخُ فِيهِ الرُّوحَ وَيُؤْمَرُ بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ: بِكَتْبِ رِزْقِهِ، وَأَجَلِهِ، وَعَمَلِهِ، وَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيدٍ فَوَاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ غَيْرُهُ إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُهَا وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا إِلَّا ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू अब्दुर रहमान अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ से रिवायत है फ़रमाते हैं: हम से अल्लाह के रसूल ने हदीस बयान की और आप ﷺ अस्सादिकुल-मस्दूक़ हैं| आप ने फ़रमाया: तुम में से हर एक की तख़लीक़ इस तरह होती है कि वो अपनी माँ के पेट में चालीस दिन तक नुतफ़े की शक्ल में रहता है, फिर इसी तरह अलक़ाह की शक्ल में रहता है, फिर इसी तरह मुज़गाह की शक्ल में रहता है, फिर उस की तरफ़ एक फ़रिश्ता भेजा जाता है, तो उस में रूह फूंक दी जाती है, और चार चीज़ों के लिख देने का हुक्म दिया जाता है| उस का रिज़्क़, उस की उम्र, उस का अमल और ये कि वो शक़ी है या सईद | उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, एक आदमी जन्तियों जैसे आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जन्नत के दरमियान बस एक हाथ का फासला रह जाता है लेकिन फिर उस पर अल्लाह का लिखा सबक़त ले जाता है और वो जहन्नामियों जैसे आमाल करने लग जाता है यहाँ तक कि जहन्नम में दाखिल हो जाता है| और एक आदमी जहन्नमयों के आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि

[1] صحيح البخاري: بدء الخلق ٣٢٠٨ – صحيح مسلم: القدر ٢٤٤٣

उस के और जहन्नम के दरमियान बस एक हाथ का फ़ासला रह जाता है लेकिन फिर उस पर अल्लाह का लिखा सबक़त ले जाता है और वो जन्तियों जैसे आमाल करने लग जाता है यहाँ तक कि वो जन्नत में दाख़िल हो जाता है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

5. अमल की कबूलियत का क़ायदा और बिदअत की बुराई

عَنْ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ أُمِّ عَبْدِ اللَّهِ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قَالَ: رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ [2] :"**مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ**" .

उम्मुल मोमिन उम्मे अब्दुल्लाह हज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है, फ़रमाती हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया, जिस ने हमारे इस अम्र (यानी दीन) में कोई ऐसी चीज़ निकाली जो उस में नहीं थी तो वो रद्द कर दी जाएगी|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

और मुस्लिम की रिवायत में यूँ है:

जिस किसी ने कोई ऐसा अमल किया जिस के करने का हम ने हुक्म नहीं दिया था, वो अमल रद्द कर दिया जाएगा|

[1] صحيح البخاري: الصلح ٢٦٩٧ – صحيح مسلم: الأقضية ١٧ – (١٧١٨)

[2] صحيح مسلم: الأقضية ١٨ – (١٧١٨) وأخرجه البخاري تعليقا في كتاب الإعتصام بالكتاب والسنة: إذا اجتهد العامل أو الحاكم فأخطأ

6. हलाल व हराम के सिलसिले में तक़वा का एहतेमाम

عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: إنَّ الْحَلَالَ بَيِّنٌوَإِنَّ الْحَرَامَ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا أُمُورٌ مُشْتَبِهَاتٌ لَا يَعْلَمُهُنَّ كَثِيرٌ مِنْ النَّاسِ فَمَنْ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ فَقَد اسْتَبْرَأَ لِدِينِهِ وَعِرْضِهِ وَمَنْ وَقَعَ فِي الشُّبُهَاتِ وَقَعَ فِي الْحَرَامِ كَالرَّاعِي يَرْعَى حَوْلَ الْحِمَى يُوشِكُ أَنْ يَرْتَعَ فِيهِ أَلَا وَإِنَّ لِكُلِّ مَلِكٍ حِمًى أَلَّا وَإِنَّ حِمَى اللَّهِ مَحَارِمُهُ أَلَّا وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً إذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُلُّهُ أَلَا وَهِيَ الْقَلْبُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू अब्दुल्लाह नोमान बिन बशीर ﷺ से रिवायत है , फ़रमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को यूँ फ़रमाते सुना: हलाल वाज़ेह है और हराम भी वाज़ेह है, और इन दोनों के दरमियान कुछ मशकूक चीज़ें हैं, जिन्हें बहुत से लोग नहीं जानते| लिहाज़ा जिस शख्स ने अपने आप को इन शक वाली चीज़ों से बचाए रखा उस ने अपने दीन और अपनी इज़्ज़त को बचा लिया| और जो इन मुश्तबह चीज़ों में जा पड़ा वो हराम में जा पड़ा| इस की मिसाल ऐसी है कि एक चरवाहा अपने जानवर ऐसी ज़मीन के क़रीब चराए जो बादशाह के लिए ख़ास है, बहुत मुमकिन है उस के जानवर उस मना की हुई जगह में जा पड़ें और चरने लगें| ख़बरदार, हर बादशाह की एक ख़ास जगह जोती है (जिस में लोगों का दाख़िला मम्नूअ होता है|) और अल्लाह की मम्नूअ जगह वो चीज़ें हैं जिन्हें उस ने हराम कर दिया है| ख़बरदार जिस्म में गोश्त का एक टुकड़ा है, अगर वो सहीह हो जाए तो सारा जिस्म सहीह हो जाता है| और अगर वही बिगड़ जाए तो सारा जिस्म बिगड़ जाता है| (ये बात अच्छी तरह) जान लो कि वो गोश्त का टुकड़ा आदमी का दिल है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الإيمان ٥٢ – صحيح مسلم: المساقاة ١٠٧ – (١٥٩٩)

7. दीन खैर ख्वाही का नाम है

عَنْ أَبِي رُقَيَّةَ تَمِيمِ بْنِ أَوْسٍ الدَّارِيِّ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: الدِّينُ النَّصِيحَةُ.
قُلْنَا: لِمَنْ؟ قَالَ لِلَّهِ، وَلِكِتَابِهِ، وَلِرَسُولِهِ، وَلِأَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ وَعَامَّتِهِمْ.
رَوَاهُ مُسْلِمٌ [1].

अबू रुकय्या तमीम बिन औस अद्दारी ﷺ से रिवायत है, कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: दीन नसीहत(खैर ख्वाही) का नाम है| हम ने पूछा: किस के लिए? आप ने फ़रमाया: अल्लाह के लिए, उस की किताब के लिए, उस के रसूल के लिए, मुसलमानों के इमाम के लिए और आम मुसलमानों के लिए|
इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الإيمان ٩٥ – (٥٥)

8. इस्लाम में दाख़िला और जान व माल की हुरमत

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: أُمِرْت أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَشْهَدُوا أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ فَإِذَا فَعَلُوا ذَلِكَ عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّ الْإِسْلَامِ وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से क़िताल करता रहूँ यहाँ तक कि वो इस बात की गवाही देदें कि अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ काएम करें, और ज़कात भी अदा करें| जब वो ऐसा कर लें तो उन्होंने अपने ख़ून और अपने माल को मुझ से महफ़ूज़ कर लिया, सिवाए इस्लाम के हक़ के, और उन का हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الإيمان ٢٥ – صحيح مسلم: الإيمان ٣٦ – (٢٢)

9. नबी ﷺ के हुक्म और मुमानअत (मना) में फर्मांबर्दारी

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ صَخْرٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: مَا نَهَيْتُكُمْ عَنْهُ فَاجْتَنِبُوهُ وَمَا أَمَرْتُكُمْ بِهِ فَأْتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ فَإِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَثْرَةُ مَسَائِلِهِمْ وَاخْتِلَافُهُمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ .

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू हुरैरह अब्दुर रहमान बिन सख़र ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को यूँ फ़रमाते सुना: जिस चीज़ से मैं तुम्हें मना करूँ उस से रुक जाओ, और जिस चीज़ का मैं तुम्हें हुक्म दूँ उसे अपने इस्तिताअत के मुताबिक पूरा करो, क्यूंकि तुम से पहलों को सवालों की कसरत और अपने नबियों से इख्तिलाफ ही ने हलाक किया है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الإعتصام بالكتاب والسنة ٧٢٨٨ – صحيح مسلم: الفضائل ١٣٠ – (١٣٣٧)

10. हलाल कमाई और क़बूलियते दुआ

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا وَإِنَّ اللَّهَ أَمَرَ الْمُؤْمِنِينَ بِمَا أَمَرَ بِهِ الْمُرْسَلِينَ فَقَالَ تَعَالَى: يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنْ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا وَقَالَ تَعَالَى: يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ : يَا رَبِّ! يَا رَبِّ! وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ وَغُذِّيَ بِالْحَرَامِ فَأَنَّى يُسْتَجَابُ لَهُ؟. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत हैं, कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तय्यिब है और वो सिवाए तय्यिब के कोई और चीज़ कबूल नहीं करता, और उस ने ईमान वालों को वही हुक्म दिया है जो रसूलों को दिया, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنْ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا }

(ऐ रसूलो, तय्यिबात(पाक चीज़ों) में से खाओ और नेक आमाल करो)
और फ़रमाया:

{ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ }

(ऐ ईमान वालो, जो पाक चीज़े हम ने तुम्हें बतौरे रिज़क दी हैं, उन्हीं में से खाओ)

फिर अल्लाह के नबी ﷺ ने एक शख्स का ज़िक्र किया जो लम्बे सफ़र पर है, बाल बिखरे हुवे हैं, गर्द व गुबार में अटा हुवा है, अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ उठा कर पुकार रहा है, या रब! या रब! लेकिन (हाल ये है कि) उस का खाना हराम है, उस का पीना हराम है, उस का लिबास हराम है, वो हराम ही पर पल रहा है, अब उस की दुआ कैसे कबूल हो सकती है?

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الزكاة ٦٥ – (١٠١٥)

11. मशकूक चीज़ से परहेज़

عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ سِبْطِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَرَيْحَانَتِهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَفِظْت مِنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ دَعْ مَا يُرِيبُك إلَى مَا لَا يُرِيبُك.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ، وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ. [1]

अबू मुहम्मद हसन बिन अली बिन अबी तालिब रज़िअल्लाहु अन्हुमा नबीﷺ के नवासे और आप की ख़ुश्बू, से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने नबीﷺ से ये बात अच्छी तरह महफ़ूज़ कर ली है: जो चीज़ तुम्हें शक में डाल दे उसे छोड़ कर तुम उस चीज़ को इख्तियार करो जो तुम्हें शक में ना डाले|

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी और नसाई ने रिवायत किया है|, और इमाम तिरमिज़ी फ़रमाते हैं: ये हदीस हसन सहीह है|

[सहीह]

[1] سنن الترمذي: ٢٥١٨، سنن النسائي: ٥٧١١

(مسند أحمد ترمذي ابن حبان) عن الحسن. [صحيح الجامع ٣٣٧٨] (صحيح)

(مسند أحمد) عَن أنس (نسائي) عَن الْحسن بن عَليّ (طبراني) عَن وابصة بن معبد (خطّ) عن ابن عمر. [صحيح الجامع ٣٣٧٧] (صحيح)

12. गैर मक़सूद चीज़ों से परहेज़ करना

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيهِ.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وابن ماجه. [1]

अबू हुरैरह ﷺ फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: आदमी के इस्लाम की खूबी ये है की जिन चीज़ों से उस का ताल्लुक नहीं उन्हें छोड़ दे|

ये हदीस हसन है, इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने रिवायत किया है|

[सहीह]

[1] سنن الترمذي: ٢٣١٧، سنن ابن ماجه: ٣٩٧٦

(ترمذي ابن ماجه) عَن أَبِي هُرَيْرَة (مسند أحمد طبراني) عَن الْحُسَيْن بن علي (الحاكم في الكنى) عن أَبِي بكر الشيرازي وعن أَبِي ذر (الحاكم فِي تَارِيخه) عَن عَليّ بن أَبِي طَالب (طبراني الصغير) عن زيد ابن ثابت (ابن عساكر) عن الحارث بن هشام. [صحيح الجامع ٥٩١١] (صحيح)

13. दूसरों से सुलूक का पैमाना

عَنْ أَبِي حَمْزَةَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ خَادِمِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू हमज़ा अनस बिन मालिकﷺ ख़ादिम ए रसूलﷺ नबीﷺ से ये फ़रमान नक़ल करते हैं कि आपﷺ ने फ़रमाया: तुम में से कोई शख्स उस वक़्त तक (कामिल) ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वो अपने (मुस्लमान) भाई के लिए भी वही चीज़ पसंद ना करे जो ख़ुद अपने लिए पसंद करता है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الإيمان ١٣ – صحيح مسلم: الإيمان ٧١ – (٤٥)

14. क़त्ल की हुरमत और इस्लामी हुदूद

عَنْ ابْنِ مَسْعُودٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ [يشهد أن لا إله إلا الله وأني رسول الله] إِلَّا بِإِحْدَى ثَلَاثٍ: الثَّيِّبُ الزَّانِي وَالنَّفْسُ بِالنَّفْسِ وَالتَّارِكُ لِدِينِهِ الْمُفَارِقُ لِلْجَمَاعَةِ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

इब्ने मसऊद ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जो मुसलमान इस बात की गवाही देता हो कि अल्लाह के सिवा कोई(माबूद) बार हक नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ उस का खून(यानी क़त्ल) हरगिज़ हलाल नहीं सिवाए तीन लोगों के: शादी शुदा ज़ानी, जान के बदले जान और दीन(इस्लाम) का छोड़ने वाला|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الديات ٦٨٧٨ – صحيح مسلم: كِتَابُ الْقَسَامَةِ وَالْمُحَارِبِينَ وَالْقِصَاصِ وَالدِّيَاتِ ٢٥ – (١٦٧٦)

15. ईमान और इस्लामी अख़लाक़ में ताल्लुक

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ جَارَهُ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِم. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि वो खैर की बात करे वरना चुप रहे| और जो शख्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि वो अपने पड़ौसी का इकराम करे| और जो शख्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि अपने मेहमान का इकराम करे|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الرقاق ٦٤٧٥ – صحيح مسلم: الإيمان ٧٤ – (٤٧)

16. गुस्से से परहेज़ करना

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَجُلًا قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَوْصِنِي. قَالَ: لَا تَغْضَبْ فَرَدَّدَ مِرَارًا، قَالَ: لَا تَغْضَبْ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है कि एक शख्स ने नबी ﷺ से कहा: मुझे वासिय्यत कीजिए| आप ने फ़रमाया: गुस्सा ना कर| उस ने कई मर्तबा सवाल दोहराया| आप ने जवाब दिया: गुस्सा ना कर|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الأدب ٦١١٦

17. एहसान की फ़ज़ीलत

عَنْ أَبِي يَعْلَى شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ ﷺ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ الْإِحْسَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَأَحْسِنُوا الْقِتْلَةَ وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَأَحْسِنُوا الذِّبْحَةَ وَلْيُحِدَّ أَحَدُكُمْ شَفْرَتَهُ وَلْيُرِحْ ذَبِيحَتَهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू याअला शद्दाद बिन औस ﷺ नबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने हर चीज़ पर अहसान लिख दिया है| लिहाज़ा जब तुम क़त्ल भी करो तो अच्छे तरीके से क़त्ल करो, और जब तुम ज़बह करो बेहतर तरीके से ज़बह करो, और तुम में से हर एक अपनी छुरी तेज़ कर ले और अपने ज़बिहा को राहत पहुंचाए|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: كِتَابُ الصَّيْدِ وَالذَّبَائِحِ وَمَا يُؤْكَلُ مِنَ الْحَيَوَانِ ٥٧ – (١٩٥٥)

18. तक़वा और गुनाहों का कफ्फारा

عَنْ أَبِي ذَرٍّ جُنْدَبِ بْنِ جُنَادَةَ وَأَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: اتَّقِ اللَّهَ حَيْثُمَا كُنْت وَأَتْبِعْ السَّيِّئَةَ الْحَسَنَةَ تَمْحُهَا وَخَالِقْ النَّاسَ بِخُلُقٍ حَسَنٍ.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ [1]

وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ، وَفِي بَعْضِ النُّسَخِ: حَسَنٌ صَحِيحٌ.

अबू ज़र जुन्दुब बिन जुनादाह और अबू अब्दुर रहमान मुआज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: तू जहाँ भी हो अल्लाह से डरता रह, और बुराई हो जाने पर उस के बाद भलाई कर ले, वो उसे मिटा देगी, और लोगों के साथ अच्छे अख़लाक़ से पेश आ|

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है|

और फ़रमाया: ये हदीस हसन है और बाज़ नुस्खों में है: हसन सहीह है|

[हसन]

[1] سنن الترمذي: ١٩٨٧

(ابو داود مسند أحمد ترمذي حاكم شعب الايمان) عَن أبي ذَر (مسند أحمد ترمذي شعب الايمان) عَن معَاذ (ابْن عَسَاكِر) عن أنس. [صحيح الجامع ٩٧] (حسن)

19. अल्लाह पर तवक्कुल और अकीदा ए क़ज़ा व क़दर

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْت خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ يَوْمًا فَقَالَ: يَا غُلَامِ! إنِّي أُعَلِّمُك كَلِمَاتٍ: احْفَظْ اللَّهَ يَحْفَظْك احْفَظْ اللَّهَ تَجِدْهُ تُجَاهَك إذَا سَأَلْت فَاسْأَلْ اللَّهَ وَإِذَا اسْتَعَنْت فَاسْتَعِنْ بِاَللَّهِ وَاعْلَمْ أَنَّ الْأُمَّةَ لَوْ اجْتَمَعَتْ عَلَى أَنْ يَنْفَعُوك بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوك إلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ لَك وَإِنْ اجْتَمَعُوا عَلَى أَنْ يَضُرُّوك بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوك إلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَيْك رُفِعَتْ الْأَقْلَامُ وَجَفَّتْ الصُّحُفُ .

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ [1] وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

وَفِي رِوَايَةِ غَيْرِ التِّرْمِذِيِّ : **احْفَظْ اللَّهَ تَجِدْهُ أمامك، تَعَرَّفْ إِلَى اللَّهِ فِي الرَّخَاءِ يَعْرِفُك فِي الشِّدَّةِ، وَاعْلَمْ أَنَّ مَا أَخْطَأَك لَمْ يَكُنْ لِيُصِيبَك، وَمَا أَصَابَك لَمْ يَكُنْ لِيُخْطِئَك، وَاعْلَمْ أَنَّ النَّصْرَ مَعَ الصَّبْرِ، وَأَنْ الْفَرَجَ مَعَ الْكَرْبِ، وَأَنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا.** [2]

अब्दुल्लाह बिन अब्बास ﷺ से रिवायत है फ़रमाते हैं: एक दिन मैं अल्लाह के रसूल ﷺ के पीछे सवार था, आप ने मुझ से फ़रमाया: ऐ बच्चे, मैं तुझे कुछ बातें सिखाता हूँ (उन्हें याद रखना) अल्लाह की हिफाज़त कर, अल्लाह तेरी हिफाज़त करेगा| अल्लाह की हिफाज़त कर तू उसे अपने सामने पाएगा| जब तू मांगे तो अल्लाह से मांग, और मदद चाहे तो अल्लाह ही से मदद तलब कर| ये बात जान ले कि सारे बन्दे अगर मिल कर तुझे फ़ायदा पहुंचना चाहें तो कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते, सिवाए उस के जो ख़ुद अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है|

[1] سنن الترمذي [٢٥١٦]

[2] قال الألباني: رواه أحمد عن ابن عباس وإسناده صحيح لغيره كما بينته في "ظلال الجنة تخريج السنة" لابن أبي عاصم. يراجع "١٣٨". [التوسل أنواعه وأحكامه ص ٣٥]

और अगर सारे बन्दे मिल कर तुझे नुकसान पहुंचना चाहें तो कुछ नुकसान नहीं पहुंचा सकते सिवाए उस के जो ख़ुद अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है| कलम उठा लिए गए और सियाही सूख चुकी|

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है| और कहा कि ये हदीस हसन सहीह है|[सहीह]

तिरमिज़ी के अलावा दूसरो ने ये भी इज़ाफ़ा रिवायत किया है:

अल्लाह की हिफाज़त कर उसे तू अपने सामने पाएगा| तू अल्लाह को अच्छे हाल में याद रख, वो तुझे तकलीफ़ के हाल में याद रखेगा| ये बात जान ले कि जो चीज़ तुझ से चूक गई वो तुझे मिलने वाली ना थी| और जो चीज़ तुझे पहुंची है वो तुझ से चूकने वाली ना थी| ये भी जान ले कि (अल्लाह की) मदद सब्र के साथ है, और कुशादगी तकलीफ़ के साथ ही है| और हर मुश्किल के साथ आसानी है|

[सहीह लिगैरिही]

20. हया की अहमियत

عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ عُقْبَةَ بْنِ عَمْرٍو الْأَنْصَارِيِّ الْبَدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ إِنَّ مِمَّا أَدْرَكَ النَّاسُ مِنْ كَلَامِ النُّبُوَّةِ الْأُولَى: إِذَا لَمْ تَسْتَحِ فَاصْنَعْ مَا شِئْتَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. [1]

अबू मसऊद उक़बा बिन अम्र अंसारी बदरी ﷺ फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: पिछले ज़माने के अम्बिया के कलाम से जो बातें बाद वालों को मिली हैं उन में से (एक बात) ये भी है कि जब तुझे हया ही महसूस ना हो तो फिर जो चाहे कर|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: أحاديث الأنبياء ٣٤٨٤

21. ईमान और इस्तिकामत की अहमियत

عَنْ أَبِي عَمْرٍو وَقِيلَ: أَبِي عَمْرَةَ سُفْيَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ ﷺ قَالَ: قُلْت: يَا رَسُولَ اللَّهِ! قُلْ لِي فِي الْإِسْلَامِ قَوْلًا لَا أَسْأَلُ عَنْهُ أَحَدًا غَيْرَك قَالَ: قُلْ: آمَنْت بِاَللَّهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू अम्र - और बाज़ ने अबू अमराह भी कहा है - सुफियान बिन अब्दुल्लाह ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने (अल्लाह के रसूल ﷺ से) कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, इस्लाम के सिलसिले में मुझे कोई ऐसी बात बता दीजिए कि आप के सिवा फिर मुझे किसी और से (इस के बारे में मज़ीद) पूछने की ज़रुरत बाक़ी ना रहे| आप ﷺ ने फ़रमाया: कह, "मैं अल्लाह पर ईमान लाया", फिर इस(बात) पर इस्तिकामत इख्तियार कर|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الإيمان ٦٢ - (٣٨)

22. फ़राइज़ की कामिल अदाएगी पर जन्नत का वादा

عَنْ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْأَنْصَارِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: أَرَأَيْت إذَا صَلَّيْت الْمَكْتُوبَاتِ وَصُمْت رَمَضَانَ وَأَحْلَلْت الْحَلَالَ وَحَرَّمْت الْحَرَامَ وَلَمْ أَزِدْ عَلَى ذَلِكَ شَيْئًا أَأَدْخُلُ الْجَنَّةَ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ [رقم:١٥]. [1]

अबू अब्दुल्लाह जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, फ़रमाते हैं: एक शख्स ने अल्लाह के रसूल ﷺ से सवाल किया, उस ने कहा: अगर मैं फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ूं, रमज़ान के रोज़े रखूं, हलाल को हलाल जानूं और हराम को हराम, और इस से ज़्यादा ना करूं तो क्या मैं जन्नत में जा सकता हूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: हां|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الإيمان ١٦ – (١٥)

23. आमाल और उन के असरात

عَنْ أَبِي مَالِكٍ الْحَارِثِ بْنِ عَاصِمٍ الْأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ الطَّهُورُ شَطْرُ الْإِيمَانِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَأُ الْمِيزَانَ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ تَمْلَآنِ –أَوْ: تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَالصَّلَاةُ نُورٌ وَالصَّدَقَةُ بُرْهَانٌ وَالصَّبْرُ ضِيَاءٌ وَالْقُرْآنُ حُجَّةٌ لَك أَوْ عَلَيْك كُلُّ النَّاسِ يَغْدُو فَبَائِعٌ نَفْسَهُ فَمُعْتِقُهَا أَوْ مُوبِقُهَا.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू मालिक हरिस बिन आसिम अशअरी ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं:

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: पाकी आधा ईमान है, और अल्हम्दुलिल्लाह तराजू को भर देता है, और सुबहानल्लाह वल्हम्दुलिल्लाह (ये कलिमा या दोनों कलिमे) आस्मान व ज़मीन के दरमियान की पूरी जगह को भर देता है - या फ़रमाया: भर देते हैं -, और नमाज़ नूर है, और सदका दलील है, और सब्र रौशनी है, और कुरआन तेरे हक़ में या तेरे ख़िलाफ़ हुज्जत (यानी दलील या गवाह) है| हर शख्स (कोशिश के लिए) निकलता है, फिर अपने आप को बेच कर ख़ुद को(जहन्नम से) आज़ाद करा लेता है या फिर हलाकत में डाल देता है|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الطهارة ١ – (٢٢٣)

24. अल्लाह की अज़मत और इंसान की मोहताजी

عَنْ أَبِي ذَرٍّ الْغِفَارِيِّ ﷺ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ: يَا عِبَادِي: إِنِّي حَرَّمْت الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِي وَجَعَلْته بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوا. يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْته فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ. يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلَّا مَنْ أَطْعَمْته فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ. يَا عِبَادِي! كُلُّكُمْ عَارٍ إِلَّا مَنْ كَسَوْته فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ. يَا عِبَادِي! إِنَّكُمْ تُخْطِئُونَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَأَنَا أَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا فَاسْتَغْفِرُونِي أَغْفِرْ لَكُمْ. يَا عِبَادِي! إِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضُرِّي فَتَضُرُّونِي وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِي فَتَنْفَعُونِي. يَا عِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا. يَا عِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي شَيْئًا. يَا عِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْت كُلَّ وَاحِدٍ مَسْأَلَته مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِمَّا عِنْدِي إِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ. يَا عِبَادِي! إِنَّمَا هِيَ أَعْمَالُكُمْ أُحْصِيهَا لَكُمْ ثُمَّ أُوَفِّيكُمْ إِيَّاهَا فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدْ اللَّهَ وَمَنْ وَجَدَ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَا يَلُومَن إِلَّا نَفْسَهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू ज़र गिफारी ﷺ नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की ख़ुद अल्लाह के नबी ﷺ ने अल्लाह से रिवायत बयान की, अल्लाह तआला फ़रमाता है: ऐ मेरे बन्दो, मैं

[1] صحيح مسلم: البر والصلة والآداب ٥٥ – (٢٥٧٧)

ने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम कर लिया है, और तुम पर भी आपस में ज़ुल्म करना हराम करार दिया है, लिहाज़ा तुम एक दूसरे पर ज़ुल्म ना करो|
ऐ मेरे बन्दो, तुम सब हिदायत से महरूम हो सिवाए उस के जिसे मैं हिदायत दूँ, तुम मुझ से हिदायत मांगो, मैं ज़रूर तुम्हें हिदायत दूंगा|
ऐ मेरे बन्दो, तुम सब भूके हो सिवाए उस के जिसे मैं खिलाऊं, लिहाज़ा तुम मुझ से खाना मांगो मैं तुम्हें खिलाउंगा|
ऐ बन्दो, तुम सब लिबास से महरूम हो, सिवाए उस के जिसे मैं लिबास अता करूं, तुम मुझ से लिबास मांगो, मैं ज़रूर तुम्हें लिबास अता करूंगा|
ऐ बन्दो, तुम रात दिन गलतियाँ करते हो, और मैं गलतियों को माफ़ करने वाला हूँ, तुम मुझ से मग्फ़िरत मांगो, मैं ज़रूर तुम्हारी मग्फ़िरत करूंगा|
ऐ बन्दो, तुम सब मिल कर भी मेरा नुक्सान नहीं कर सकते और ना ही तुम सब मिल कर मुझे फ़ायदा पहुंचा सकते हो|
ऐ मेरे बन्दो, तुम सब के सब, अव्वलीन से आखिरीन तक, जिन्नात भी और इन्सान भी सब से मुत्तकी शख्स के दिल की तरह हो जाएं तो इस से मेरी बादशाहत में कुछ भी इज़ाफ़ा नहीं होगा|
ऐ बन्दो, अगर तुम सब, अव्वलीन से ले कर अखिरीन तक, जिन्नात और इन्सान किसी बद्तरीन गुनाहगार शख्स के दिल की तरह हो जाएं तो मेरी बादशाहत में इस से कोई भी कमी ना होगी|
ऐ बन्दो, तुम सब के सब, जिन्नात और इन्सान, जमा हो कर एक साथ मुझ से मांगें और मैं उन्हें उन की मांगी हुई चीज़ दे भी दूँ तो इस से मेरे पास जो कुछ है उस में इतनी कमी भी ना होगी जितनी कमी समंदर में सूई डुबोने से उस समंदर में होती है|
ऐ मेरे बन्दो, ये तो बस तुम्हारे ही आमाल हैं जिन्हें मैं तुम्हारे लिए महफ़ूज़ कर के रख रहा हूँ, फिर (उन का बदला) पूरी तरह तुम्हें अता करूंगा| लिहाज़ा जिस को भलाई (यानी इनआम) मिले वो अल्लाह ही की हम्द करे और जिसे बुराई (यानी सज़ा) मिले वो ख़ुद अपने आप ही को मलामत करे|
इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

25. नेकी के रास्तों की कसरत

عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷛ أَيْضًا أَنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ يَا رَسُولَ اللَّهِ ذَهَبَ أَهْلُ الدُّثُورِ بِالْأُجُورِ يُصَلُّونَ كَمَا نُصَلِّي وَيَصُومُونَ كَمَا نَصُومُ وَيَتَصَدَّقُونَ بِفُضُولِ أَمْوَالِهِمْ. قَالَ: أَوَلَيْسَ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ مَا تَصَّدَّقُونَ؟ إِنَّ بِكُلِّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةً وَكُلِّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةً وَكُلِّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةً وَكُلِّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةً وَأَمْرٌ بِمَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ وَنَهْيٌ عَنْ مُنْكَرٍ صَدَقَةٌ وَفِي بُضْعِ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ. قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيَأْتِي أَحَدُنَا شَهْوَتَهُ وَيَكُونُ لَهُ فِيهَا أَجْرٌ؟ قَالَ: أَرَأَيْتُمْ لَوْ وَضَعَهَا فِي حَرَامٍ أَكَانَ عَلَيْهِ وِزْرٌ؟ فَكَذَلِكَ إِذَا وَضَعَهَا فِي الْحَلَالِ، كَانَ لَهُ أَجْرٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू ज़र ﷛ ही से रिवायत है कि अल्लाह के रसूलﷺ के सहबा में से बाज़ सहाबा ने आप ﷺ से कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, मालदार लोग सारे अज्र ले गए, हमारी तरह वो भी नमाज़ पढ़ते है, हमारे साथ वो भी रोज़ा रखते है, लेकिन वो अपने ज़ाएद मालों को सदक़ा कर देते हैं (जो हम नहीं कर सकते) आप ﷺ ने फ़रमाया: क्या अल्लाह ने तुम्हारे लिए सदके के और रास्ते नहीं पैदा कर दिए हैं? हर तस्बीह सदक़ा है, हर तकबीर सदक़ा है, हर तहमीद सदक़ा है, हर तहलील(ला इलाहा इल्लल्ला कहना) सदक़ा है, भलाई का हुक्म देना सदक़ा है, बुराई से रोकना सदक़ा है, यहाँ तक कि तुम्हारा अपनी बीवियों से सोहबत करना भी सदक़ा है| उन्होंने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल, हम में से एक शख्स अपनी शहवत पूरी करता है और उसे इस पर भी अज्र मिलता है? आप ने फ़रमाया: बताओ, अगर वो हराम तरीके से अपनी ख्वाहिश पूरी करता तो क्या उस पर गुनाह का बोझ ना होता? बस इसी तरह जब उस ने हलाल तरीके से अपनी ख्वाहिश पूरी की तो उस के लिए अज्र है|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الزكاة ٥٣ - (١٠٠٦)

26. सदक़े का मक़ाम और उस की सूरतें

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ كُلُّ سُلَامَى مِنْ النَّاسِ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ كُلَّ يَوْمٍ تَطْلُعُ فِيهِ الشَّمْسُ تَعْدِلُ بَيْنَ اثْنَيْنِ صَدَقَةٌ وَتُعِينُ الرَّجُلَ فِي دَابَّتِهِ فَتَحْمِلُهُ عَلَيْهَا أَوْ تَرْفَعُ لَهُ عَلَيْهَا مَتَاعَهُ صَدَقَةٌ وَالْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ وَبِكُلِّ خُطْوَةٍ تَمْشِيهَا إِلَى الصَّلَاةِ صَدَقَةٌ وَتُمِيطُ الْأَذَى عَنْ الطَّرِيقِ صَدَقَةٌ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: हर दिन जिस में सूरज तुलूअ होता है उस में आदमी के हर जोड़ पर सदक़ा (देना ज़रूरी) है| दो आदमियों के दरमियान अद्ल (की बुनियाद पर फैसला) करना सदका है, किसी आदमी को उस की सवारी पर सवार होने में मदद करना या उस की मताअ (चीज़) उठा कर उसे सवारी पर रख देना सदक़ा है, अच्छी बात सदक़ा है, नमाज़ की तरफ़ चलने वाला हर कदम सदक़ा है, और रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ हटा देना सदक़ा है|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الجهاد والسير ٢٩٨٩ – صحيح مسلم: الزكاة ٥٦ – (١٠٠٩)

27. इंसान के दिल पर नेकी और गुनाह के असरात

عَنْ النَّوَّاسِ بْنِ سَمْعَانَ ﷺ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِك وَكَرِهْت أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ

رَوَاهُ مُسْلِمٌ [رقم:٢٥٥٣]. [١]

وَعَنْ وَابِصَةَ بْنِ مَعْبَدٍ ﷺ قَالَ: أَتَيْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ: جِئْتَ تَسْأَلُ عَنْ الْبِرِّ؟ قُلْت: نَعَمْ. فقَالَ: استفت قلبك الْبِرُّ مَا اطْمَأَنَّتْ إلَيْهِ النَّفْسُ وَاطْمَأَنَّ إلَيْهِ الْقَلْبُ وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي النَّفْسِ وَتَرَدَّدَ فِي الصَّدْرِ وَإِنْ أَفْتَاك النَّاسُ وَأَفْتَوْك.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَيْنَاهُ فِي مُسْنَدَي الْإِمَامَيْنِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ وَالدَّارِمِيِّ بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ. [٢]

नवास बिन समआन ﷺ से रिवायत है, वो नबी ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ﷺ ने फ़रमाया: नेकी अच्छे अख़लाक़ का नाम है, और गुनाह वो है जो तेरे जी में खटके और तुझे ये नापसंद हो कि लोगों को वो बात मालूम हो जाए|
इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

वाबिसा बिन माअबद ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं अल्लाह के रसूल ﷺ के पास आया| आप ﷺ ने मुझ से कहा: क्या तुम नेकी के मुताल्लिक़ पूछने आए हो? मैं ने कहा: जी हां| आप ने फ़रमाया: अपने दिल से फ़त्वा तलब करो| नेकी वो है जिस पर आदमी का दिल मुतमइन हो जाए और उस के दिल में इत्मिनान पैदा हो जाए, और गुनाह वो है जो जी में खटकता रहे, और सीने में तरद्दुद पैदा कर दे| चाहे फ़त्वा देने वाले तुझे फ़त्वा भी दे चुके हों|

[1] صحيح مسلم: البر والصلة والآداب ١٤ – (٢٥٥٣)

[2] مسند أحمد ط الرسالة (٢٥/ ٤٥٧) رقم ١٦٠٥٩ والدارمي [٢٥٧٥] وصحيح الترغيب للألباني [١٧٣٤] (حسن لغيره)

ये हदीस हसन है, हम ने इसे दोनों इमामों की मुस्नदों, मुसनद अहमद और मुसनद दारिमी में रिवायत किया है|

[हसन लिगैरिही]

28. इत्तेबा ए सुन्नत की अहम्मिय्यत और बिदअत का अंजाम

عَنْ أَبِي نَجِيحٍ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ ﷺ قَالَ: وَعَظَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ مَوْعِظَةً وَجِلَتْ مِنْهَا الْقُلُوبُ وَذَرَفَتْ مِنْهَا الْعُيُونُ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ! كَأَنَّهَا مَوْعِظَةُ مُوَدِّعٍ فَأَوْصِنَا قَالَ: أُوصِيكُمْ بِتَقْوَى اللَّهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَإِنْ تَأَمَّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ فَإِنَّهُ مَنْ يَعِشْ مِنْكُمْ فَسَيَرَى اخْتِلَافًا كَثِيرًا فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِينَ الْمَهْدِيينَ عَضُّوا عَلَيْهَا بِالنَّوَاجِذِ وَإِيَّاكُمْ وَمُحْدَثَاتِ الْأُمُورِ فَإِنَّ كُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ [1] وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ.

अबू नजीह इर्बाज़ बिन सारिया ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: एक दिन अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें ऐसा वाअज़ सुनाया कि जिस से दिल दहल गए और आंखे नम हो गईं| हम ने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल, आप का ये वाअज़ तो विदाअ होने वाले के वाअज़ की तरह है| लिहाज़ा आप हमें वासिय्यत कीजिए| आप ﷺ ने फ़रमाया: मैं तुम्हें अल्लाह से तक्वा (यानी अल्लाह से डरने) की वासिय्यत करता हूं| और सुनने और मानने की वासिय्यत करता हूं चाहे तुम पर एक किसी गुलाम ही को अमीर बना दिया जाए| इस लिए कि तुम में से जो भी जिंदगी पाएगा वो बहुत इख्तिलाफ़ देखेगा, पस तुम पर मेरी सुन्नत और मेरे हिदायत याफ़्ता ख़ुलफ़ाए राशिदीन की सुन्नत की पैरवी ज़रूरी है| इसे अपनी दाढ़ों से मज़बूती के साथ पकड़ लो, और ख़बरदार, (दीनी) उमूर में नई नई चीजों से बचो, क्यूंकि हर बिदअत गुमराही है|

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी और अबू दाउद ने रिवायत किया है|
और(इमाम तिरमिज़ी) ने कहा: ये हदीस हसन सहीह है|

[सहीह]

[1] أَبُو دَاوُدَ [٤٦٠٧]، وَالتِّرْمِذِيُّ [٢٦٧٦]
(مسند أحمد ابو داود ترمذي ابن ماجه حاكم) عن العرباض بن سارية. [صحيح الجامع ٢٥٤٩] (صحيح)

29. ज़बान की हिफाज़त

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ ﷺ قَالَ: قُلْت يَا رَسُولَ اللَّهِ! أَخْبِرْنِي بِعَمَلٍ يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ وَيُبَاعِدُنِي مِنْ النَّارِ قَالَ: لَقَدْ سَأَلْت عَنْ عَظِيمٍ وَإِنَّهُ لَيَسِيرٌ عَلَى مَنْ يَسَّرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ: تَعْبُدُ اللَّهَ لَا تُشْرِكْ بِهِ شَيْئًا وَتُقِيمُ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ، وَتَصُومُ رَمَضَانَ وَتَحُجُّ الْبَيْتَ ثُمَّ قَالَ: أَلَا أَدُلُّك عَلَى أَبْوَابِ الْخَيْرِ؟ الصَّوْمُ جُنَّةٌ وَالصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيئَةَ كَمَا يُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ وَصَلَاةُ الرَّجُلِ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ ثُمَّ تَلَا: {تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ} حَتَّى بَلَغَ {يَعْمَلُونَ} ثُمَّ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُك بِرَأْسِ الْأَمْرِ وَعَمُودِهِ وَذُرْوَةِ سَنَامِهِ؟ قُلْت: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ. قَالَ: رَأْسُ الْأَمْرِ الْإِسْلَامُ وَعَمُودُهُ الصَّلَاةُ وَذُرْوَةُ سَنَامِهِ الْجِهَادُ ثُمَّ قَالَ: أَلَا أُخْبِرُك بِمَلَاكِ ذَلِكَ كُلِّهِ؟ فقُلْت: بَلَى يَا رَسُولَ الله ! فَأَخَذَ بِلِسَانِهِ وَقَالَ: كُفَّ عَلَيْك هَذَا. قُلْت: يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَإِنَّا لَمُؤَاخَذُونَ بِمَا نَتَكَلَّمُ بِهِ؟ فَقَالَ: ثَكِلَتْك أُمُّك وَهَلْ يَكُبُّ النَّاسَ عَلَى وُجُوهِهِمْ –أَوْ قَالَ عَلَى مَنَاخِرِهِمْ– إلَّا حَصَائِدُ أَلْسِنَتِهِمْ؟!.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ. [1]

मुआज़ बिन जबल ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाखिल कर दे और जहन्नम से दूर कर दे| आप ने फ़रमाया: तुम ने एक बहुत अज़ीम चीज़ का सवाल किया है, और ये चीज़ उस शख्स के लिए बहुत आसान जिस के लिए खूद अल्लाह तअला इसे आसान कर दे| तुम अल्लाह ही की इबादत करो, उस के साथ किसी चीज़ को शरीक ना करो, नमाज़ काएम् करो, ज़कात अदा करो, रमज़ान के रोज़े रखो, और अल्लाह के घर का हज करो| फिर फ़रमाया: क्या मैं

[1] التِّرْمِذِيُّ [رقم:٢٦١٦]
(مسند أحمد ترمذي حاكم ابن ماجه شعب الايمان) عَن مَعَاذ (طبراني شعب الايمان) [صحيح الجامع ٥١٣٦] (صحيح)

तुम्हें खैर के दरवाज़े ना बता दूं? रोज़ा ढाल है, और सदक़ा गुनाह को ऐसे मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है, और रात के वक़्त अदा की जाने वाली नमाज़, फिर आप ने ये आयत पढ़ी: {تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ} उन (नेक बन्दों) के पहलू अपने बिस्तरों से अलाहदा (अलग) ही रहते हैं| यहां तक कि आप ने {يَعْمَلُونَ} तक पढ़ा| फिर कहा: क्या मैं तुम्हें दीन की जड़, उस का सुतून और उस का सब से ऊँचा हिस्सा ना बतऊँ? मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, ज़रूर बताएं| आप ने फ़रमाया: दीन की जड़ इस्लाम (यानी कामिल फर्मांबर्दारी या शहादतैन का इक़रार) है, उस का सुतून नमाज़ है, और उस का सब से ऊंचा हिस्सा जिहाद है| फिर फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें इन तमाम चीज़ों की अस्ल बुनियाद ना बताऊं? मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, ज़रूर बताएं| आप ने अपनी ज़बान को पकड़ कर कहा: इस को रोके रखो| मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, हम ज़बान से जो बातें करते हैं उन बातों पर भी हमारी पकड़ होगी? फ़रमाया: तुझे तेरी मां गुम कर दे, क्या लोगों की ज़बान की फसल(यानी कमाई) ही वो चीज़ नहीं जो उन्हें मुहं के बल- या फ़रमाया: नाक के बल- घसीट कर जहन्नम में ले जाएगी?

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया और फ़रमाया: ये हदीस हसन सहीह है|

[सहीह]

30. इस्लाम में हलाल व हराम का काएदा

عَنْ أَبِي ثَعْلَبَةَ الْخُشَنِيِّ جُرْثُومِ بن نَاشِبٍ ﷺ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَال: إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى فَرَضَ فَرَائِضَ فَلَا تُضَيِّعُوهَا وَحَدَّ حُدُودًا فَلَا تَعْتَدُوهَا وَحَرَّمَ أَشْيَاءَ فَلَا تَنْتَهِكُوهَا وَسَكَتَ عَنْ أَشْيَاءَ رَحْمَةً لَكُمْ غَيْرَ نِسْيَانٍ فَلَا تَبْحَثُوا عَنْهَا.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ وَغَيْرُهُ. [1]

अबू साअलबा जुर्सूम बिन नाशिब ﷺ से रिवायत है, वो अल्लाह के रसूल ﷺ से रिवायत करते है की आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तअला ने फ़राइज़ मुक़र्रर कर दिए हैं, उन्हें हरगिज़ ज़ाए ना करो, और उस ने कुछ हदें मुक़र्रर कर दी हैं, उन्हें पार ना करो, और उस ने कुछ चीज़ों को हराम कर दिया है, उन हराम चीज़ों में ना जा पडो, और बाज़ चीज़ों के सिलसिले में उस ने सुकूत इख्तियार किया है, भूल कर नहीं बल्कि तुम पर रहम करते हुए, लिहाज़ा उन चीज़ों खोद कुरेद में ना पड़ो|

ये हदीस हसन है, इमाम दार क़ुतनी वगैरह ने इसे रिवायत किया है|

[ज़ईफ़]

[1] الدارقطني [٤٣٩٦] قال الألباني في غاية المرام رقم ٤ (ضعيف)

عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ أَبُو الدَّرْدَاءِ يَرْفَعُ الْحَدِيثَ قَالَ: مَا أَحَلَّ اللَّهُ فِي كِتَابِهِ فَهُوَ حَلَالٌ، وَمَا حَرَّمَ فَهُوَ حَرَامٌ، وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فَهُوَ عَافِيَةٌ فَاقْبَلُوا مِنَ اللَّهِ عَافِيَتَهُ، فَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُنْ نَسِيًّا، ثُمَّ تَلَا هَذِهِ الْآيَةَ {وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا} [مريم: ٦٤]

(قط هق ك البزار الطبراني في مسند الشاميين) [الصحيحة ٢٢٥٦، غاية المرام رقم ٢] (حسن)

अबू दरदा ﷺ से रिवायत है, वो इसे मर्फूअन रिवायत करते हैं, कि अल्लाह तआला ने अपनी किताब में जस चीज़ को हलाल करार दिया वो हलाल है, और जिसे हराम करार दिया वो हराम है, और जिस चीज़ के सिलसिले में सुकूत इख़्तियार किया वो आफ़ियत है, तो अल्लाह की तरफ़ से अता की गई आफ़ियत को कबूल कर लो इस लिए कि अल्लाह तआला कभी भूलता नहीं | फिर आप ने ये आयत पढ़ी : {وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا}

और तेरा रब कभी भूलता नहीं | [मरयम ६४]

(दार क़ुतनी, बैहकी, हाकिम, बज्जार, मुसनद अश-शामिय्यीन लित-तबरानी) [अस्सहीहा २२५६, गायातुल मराम हदीस नम्बर २] (हसन)

31. ज़ोह्द की फ़ज़ीलत

عَنْ أَبِي الْعَبَّاسِ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيّ ﷺ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ الله دُلَّنِي عَلَى عَمَلٍ إِذَا عَمِلْتُهُ أَحَبَّنِي اللَّهُ وَأَحَبَّنِي النَّاسُ فَقَالَ: ازْهَدْ فِي الدُّنْيَا يُحِبُّك اللَّهُ وَازْهَدْ فِيمَا عِنْدَ النَّاسِ يُحِبُّك النَّاسُ.

حديث حسن، رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَغَيْرُهُ بِأَسَانِيدَ حَسَنَةٍ. [1]

अबू अब्बास सहल बिन सअद अस्साइदी ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: एक शख़्स नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा, और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए कि उस के करने से अल्लाह भी मुझ से मुहब्बत करे और लोग भी मुहब्बत करने लगें| आप ﷺ ने फ़रमाया: दुनिया में ज़ोह्द इख्तियार करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा, और जो कुछ लोगों के पास है उस से बेरग़बत हो जाओ, लोग भी तुम से मुहब्बत करने लगेंगे|

ये हदीस हसन है, उसे इमाम इब्ने माजा वग़ैरह ने हसन सनदों से रिवायत किया है|

[सहीह]

[1] ابْنُ مَاجَهْ [٤١٠٢]، (ابن ماجه طبراني حاكم شعب الايمان) عن سهل بن سعد. [صحيح الجامع ٩٢٢] (صحيح) [الصحيحة ٩٤٠]

32. दूसरों को तकलीफ देने की मुमानअत

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ سَعْدِ بْنِ مَالِكِ بْنِ سِنَانٍ الْخُدْرِيّ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: لَا ضَرَرَ وَلَا ضِرَارَ.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ، وَالدَّارَقُطْنِيّ وَغَيْرُهُمَا مُسْنَدًا. وَرَوَاهُ مَالِكٌ فِي "الْمُوَطَّإِ" عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ مُرْسَلًا، فَأَسْقَطَ أَبَا سَعِيدٍ، وَلَهُ طُرُقٌ يُقَوِّي بَعْضُهَا بَعْضًا. [1]

अबू सईद सअद बिन मालिक बिन सिनान ख़ुदरी ﷺ से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: (इस्लाम में) ना ज़रर है ना ज़िरार | [2]

ये हदीस हसन है, इसे इब्ने माजा और दार क़ुतनी वगैरह ने मुसनदन रिवायत किया है|

और इमाम मालिक ने मुवत्ता में अम्र बिन यहया अन अबीहि अनिन-नबिय्य ﷺ के तरीक से मुर्सलन रिवायत किया है| पस उन्होंने सनद से अबू सईद ﷺ को साक़ित कर दिया| इस हदीस के और भी तुरुक़ हैं जो एक दूसरे को तक़वियत देते हैं|

[सहीह]

[1] ابن ماجه [٢٣٤٠] عن عبادة و[٢٣٤١] عن ابن عباس والدارقطني [٣٠٧٩] عن أبي سعيد و[٤٥٣٩] عن عائشة (مسند أحمد ابن ماجه) عن ابن عباس (ابن ماجه) عن عبادة. [صحيح الجامع ٧٥١٧] (صحيح)

[2] ज़र्र: किसी को अपने फायदे के लिए नुकसान या तकलीफ देना |

ज़रार: बिला फायदा किसी को नुकसान या तकलीफ देना या ज़र्र के बदले ज़र्र पहुंचना|

33. हुक़ूक के सिलसिले में दावे के साथ दलील की ज़रुरत

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: لَوْ يُعْطَى النَّاسُ بِدَعْوَاهُمْ لَادَّعَى رِجَالٌ أَمْوَالَ قَوْمٍ وَدِمَاءَهُمْ لَكِنَّ الْبَيِّنَةَ عَلَى الْمُدَّعِي وَالْيَمِينَ عَلَى مَنْ أَنْكَرَ.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ [١] وَغَيْرُهُ هَكَذَا، وَبَعْضُهُ فِي الصَّحِيحَيْنِ. [٢]

इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है, कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: अगर लोगों को महज़ उन के दावों की बुनियाद पर हक़ दे दिया जाता तो कई लोग दूसरों के माल और उन के खून पर दावा कर देते, लेकिन (उसूल ये है कि) दलील की ज़िम्मेदारी दावा करने वाले पर है, और जो (इस दावे का) इन्कार करे उस के ज़िम्मे यमीन (यानी कसम) है|

ये हदीस हसन है, इसे इमाम बैह्की वगैरह ने इसी तरह ही रिवायत किया है, और इस का बाज़ हिस्सा सहीहैन में भी मौजूद है|

[सहीह]

[1] البيهقي بن السنن الكبرى [الدعوى والبينات ٢١٢٠١]

قال الألباني (صحيح) في إرواء الغليل ٢٦٨٥

[2] صحيح البخاري: تفسير القرآن ٤٥٥٢ – صحيح مسلم: الأقضية ١ – (١٧١١)

34. बुराइयों को रोकने की कोशिश और उस के मरातिब

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيّ ﷺ قَالَ سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهِ فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ وَذَلِكَ أَضْعَفُ الْإِيمَانِ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू सईद खुदरी ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को यूं फ़रमाते सुना: तुम में से जो शख्स किसी बुराई को होता देखे वो उसे हाथ से रोक दे, अगर इस की ताकत ना हो तो ज़बान से(रोके), और अगर इस की भी ताकत ना हो तो दिल से (उस के रोकने की फ़िक्र करे) और ये ईमान का कमज़ोर तरीन दर्जा है|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: الإيمان ٧٨ – (٤٩)

35. मुसलमान के साथ अच्छे सुलूक की अहम्मिय्यत

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: لَا تَحَاسَدُوا وَلَا تَنَاجَشُوا وَلَا تَبَاغَضُوا وَلَا تَدَابَرُوا وَلَا يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لَا يَظْلِمُهُ وَلَا يَخْذُلُهُ وَلَا يَكْذِبُهُ وَلَا يَحْقِرُهُ التَّقْوَى هَاهُنَا – وَيُشِيرُ إِلَى صَدْرِهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ – بِحَسْبِ امْرِئٍ مِنْ الشَّرِّ أَنْ يَحْقِرَ أَخَاهُ الْمُسْلِمَ كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ: دَمُهُ وَمَالُهُ وَعِرْضُهُ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: आपस में हसद ना करो, महज़ क़ीमत बढ़ाने के लिए बोली पर बोली ना लगाओ, आपस में एक दूसरे से बुग्ज़ ना रखो, और ना ही ताल्लुक तोड़ कर एक दूसरे को पीठ दिखाओ| और तुम में से कोई किसी की बैअ पर बैअ ना करे, बल्कि तुम सब अल्लाह के बन्दे और एक दूसरे के भाई बन जाओ| एक दूसरे मुसल्मान का भाई है, वो उस पर ज़ुल्म नहीं करता, वो उस को (बे मदद) छोड़ नहीं देता| वो ना उसे झुट्लाता है और ना ही उसे हक़ीर समझता है| तक़वा यहां है| और आप ﷺ ने अपने सीने की तरफ इशारा करते हुवे तीन मर्तबा ये बात कही| आदमी के लिए इतना ही शर काफी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर समझे| एक मुसल्मान की ये सारी चीज़ें दूसरे मुसल्मान पर हराम हैं, उस का खून, उस का माल, उस की इज़्ज़त|

इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: البر والصلة والآداب ٣٢ – (٢٥٦٤)

36. दीन का इल्म सीखने और सिखाने की फ़ज़ीलत

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَنْ نَفَّسَ عَنْ مُؤْمِنٍ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ الدُّنْيَا نَفَّسَ اللَّهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَمَنْ يَسَّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِما سَتَرَهُ اللهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاَللَّهُ فِي عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنِ أَخِيهِ وَمَنْ سَلَكَ طَرِيقًا يَلْتَمِسُ فِيهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللَّهُ لَهُ بِهِ طَرِيقًا إِلَى الْجَنَّةِ وَمَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللَّهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَيَتَدَارَسُونَهُ فِيمَا بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمْ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمْ الرَّحْمَةُ وَذَكَرَهُمْ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ وَمَنْ أَبَطْأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ بهذا اللفظ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है, वो नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: जो शख्स एक मोमिन से दुनिया की तक्लीफ़ों में से कोई तकलीफ़ दूर करे अल्लाह तआला उस से क़ियामत के दिन की तक्लीफ़ों में से कोई तकलीफ़ दूर कर देगा| और जो किसी मुसल्मान के ऐब पर पर्दा डाल दे, अल्लाह तअला दुनिया और आख़िरत में उस के साथ पर्दा पोशी का मुआमला फ़रमाएगा, और अल्लाह तआला बन्दे की मदद पर होता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद पर हो, और जो शख्स इल्म की तलब में कोई रास्ता चलता है अल्लाह तअला उस के इस अमल की बुनियाद पर उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है, और जब भी कुछ लोग अल्लाह के किसी घर में जमा हो कर अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और आपस में उस का दर्स करते हैं तो उन पर सकीनत नाज़िल होती है, उन्हें रहमत ढांप लेती है, और अल्लाह अपने पास फरिश्तों में उन का तज़किरा करता है, और जिस शख्स को उस का अमल पीछे कर दे उसे उस का नसब आगे नहीं कर सकता|

इस हदीस को इन अलफ़ाज़ के साथ इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है|

[1] صحيح مسلم: كتاب الذِّكْرِ وَالدُّعَاءِ وَالتَّوْبَةِ وَالِاسْتِغْفَارِ ٣٨ – (٢٦٩٩)

37. नेकी और गुनाह के सिलसिले में अल्लाह का फ़ज़ल और अदल

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فِيمَا يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ: إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ الْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ ثُمَّ بَيَّنَ ذَلِكَ فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللَّهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً وَإِنْ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللَّهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ وَإِنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللَّهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً وَإِنْ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللَّهُ سَيِّئَةً وَاحِدَةً".

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ فِي صحيحيهما بهذه الحروف. [1]

इब्ने अब्बास ﷺ से रिवायत है, वो अल्लाह के रसूल ﷺ से रिवायत करते है, जो आप ﷺ ख़ुद अल्लाह तबारक व तआला से रिवायत करते हैं: फ़रमाया: अल्लाह तआला ने नेकियां और बुराइयां लिख दीं, फिर इसे बयान भी कर दिया| लिहाज़ा जो शख्स किसी नेकी का इरादा करे लेकिन उस पर अमल ना कर सके तो अल्लाह तआला अपने पास उस के लिए एक कामिल नेकी लिख देता है, और अगर वो उस नेकी की निय्यत करने के बाद उस पर अमल भी कर ले तो अल्लाह तआला उस के लिए अपने पास दस गुना से ले कर सात सौ गुना तक बल्कि उस से भी कई गुना ज़्यादा नेकियां लिख देता है| और अगर बन्दा किसी गुनाह का इरादा करे लेकिन फिर उस गुनाह से बाज़ रहे तो अल्लाह तआला उस के लिए भी अपने पास एक कामिल नेकी लिख देता है, और अगर वो बन्दा उस गुनाह को कर बैठे तो उस के लिए बस एक ही गुनाह लिख देता है|
इस हदीस को इमाम बुख़ारी और मुस्लिम ने अपनी अपनी सहीह में इन्हीं अलफ़ाज़ से रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الرقاق ٦٤٩١ – صحيح مسلم: الإيمان ٢٠٧ – (١٣١)

38. विलायत का हुसूल और उसके लवाज़मात

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُول اللَّهِ ﷺ : إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتهُ بِالْحَرْبِ وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُهُ عَلَيْهِ وَلَا يَزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْت سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا وَلَئِنْ سَأَلَنِي لَأُعْطِيَنَّهُ وَلَئِنْ اسْتَعَاذَنِي لَأُعِيذَنَّهُ.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. [1]

अबू हुरैरह ﷺ से रिवायत है, फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला फ़रमाता है: जो मेरे किसी वाली से दुश्मनी करे, उस के लिए मेरी तरफ़ से जंग का ऐलान है| और बन्दा फ़राइज़ से ज़्यादा किसी और चीज़ से मेरा क़ुर्ब (नज़दीकी) हासिल नहीं कर सकता, और नवाफ़िल के ज़रिए वो मेरे क़ुर्ब में मज़ीद बढ़ता रहता है यहां तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूं, पस जब मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं तो मैं उस का कान बन जाता हूं जिस से वो सुने, उस की आंख बन जाता हूं जिस से वो देखे, उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वो पकड़े और उस का पांव बन जाता हूं जिस से वो चले| और अब (मामला ये हो जाता है) कि अगर वो मुझ से मांगे तो मैं उसे अता करूं और वो मुझ से पनाह मांगे तो ज़रूर उसे पनाह दूं|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الرقاق ٦٥٠٢

39. इस्लामी अहकाम में इंसानी मजबूरियों की रिआयत

عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ تَجَاوَزَ لِي عَنْ أُمَّتِي الْخَطَأَ وَالنِّسْيَانَ وَمَا اسْتُكْرِهُوا عَلَيْهِ.

حَدِيثٌ حَسَنٌ، رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيّ [1]

इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत से ख़ता, भूल और उस अमल से दरगुज़र का मुआमला किया है जो उन से जब्र करके करवाया जाए|

ये हदीस हसन है, इसे इब्ने माजा और बैहक़ी ने रिवायत किया है|

[सहीह]

[1] ابن ماجه [٢٠٤٥] والبيهقي في السنن الكبرى [١٥٠٩٤، ٢٠٠١٣]
(ابن ماجه بيهقي) عَن أبي هريرة. [صحيح الجامع ١٧٢٩] (صحيح)

40. दुनियां में रह कर आखिरत की फ़िक्र और तय्यारी करना

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِمَنْكِبِي وَقَالَ: كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّك غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ. وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: إذَا أَمْسَيْتَ فَلَا تَنْتَظِرْ الصَّبَاحَ وَإِذَا أَصْبَحْتَ فَلَا تَنْتَظِرْ الْمَسَاءَ وَخُذْ مِنْ صِحَّتِك لِمَرَضِك وَمِنْ حَيَاتِك لِمَوْتِك.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. [1]

इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, फ़रमाते है, अल्लाह के रसूल ﷺ ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और फ़रमाया: दुनियां में ऐसे रहो जैसे कोई मुसाफ़िर हो या रास्ता पार करने वाला| और इब्ने उमर रज़िअल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते: जब तुम शाम करो तो सुबह का इन्तिज़ार ना करो, और जब सुबह करो तो शाम का इन्तिज़ार ना करो, अपनी सिह्हत के ज़माने में अपनी बीमारी के ज़माने के लिए कुछ (तोशा) ले लो, और अपनी ज़िंदगी में मौत के लिए (आमाल) जमा कर लो|

इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है|

[1] صحيح البخاري: الرقاق ٦٤١٦

41. अपनी ख्वाहिशात को शरीअत के ताबे करना

عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُونَ هَوَاهُ تَبَعًا لِمَا جِئْتُ بِهِ.

حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ، رَوَيْنَاهُ فِي كِتَابِ "الْحُجَّةِ" [1] بِإِسْنَادٍ صَحِيحٍ.

अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है, फरमाते हैं: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: तुम में से कोई शख्स ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि उस की ख्वाहिश उस (दीन) के ताबेअ न हो जाए जिसे मैं लेकर आया हूँ| [२]

ये हदीस हसन सहीह है, इसे हम ने किताबुल हुज्जाह में सहीह सनद से रिवायत किया है|

[ज़ईफ़]

[1] الحجة في بيان المحجة [حديث ١٠٣] للإمام قوام السنة [٤٥٧-٥٣٥ هـ] إسماعيل بن مُحَمَّد بن الفضل بن علي القرشي الطليحي التيمي الأصبهاني أبو القاسم الملقب بقوام السنة

قال الألباني: (ضعيف) في تحقيق المشكاة ١٦٧

[2] قال الله تعالى: {فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا } [النساء: ٦٥]

हर गिज़ नहीं, आप के रब की क़सम, (ऐ नबी), ये लोग ईमान वाले नहीं हो सकते, जब तक कि ये अपने आपसी झगड़ों में आप को हकम न बनाएं, फिर आप जो फैसला कर दें इस से अपने जी में तंगी भी न पाएं बल्कि पूरी तरह तस्लीम कर लें| [अन निसा ६५]

42. अल्लाह की रहमत और गुनाहों की मग्फ़िरत

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: سَمِعْت رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: يَا ابْنَ آدَمَ! إِنَّكَ مَا دَعَوْتنِي وَرَجَوْتنِي غَفَرْتُ لَك عَلَى مَا كَانَ مِنْك وَلَا أُبَالِي يَا ابْنَ آدَمَ! لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوبُك عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتنِي غَفَرْتُ لَك يَا ابْنَ آدَمَ! إنَّك لَوْ أَتَيْتنِي بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيتنِي لَا تُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَأَتَيْتُك بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً.

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ. [1]

अनस बिन मालिक ﷺ फरमाते हैं: मैं ने अल्लाह के रसूल ﷺ को यूं फ़रमाते सुना: अल्लाह तआला का फ़रमान है: ऐ इब्ने आदम, जब तक तू मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से उम्मीद रखे रहेगा तेरा अमल जैसा भी हो मैं तेरी मग्फ़िरत करता रहूँगा, और मुझे इसकी कुछ परवा नहीं| ऐ इब्ने आदम, तेरे गुनाह चाहे आस्मान कि बुलंदी को छू जाएं फिर तू मुझ से मग्फ़िरत चाहे तो मैं ज़रूर तेरी मग्फ़िरत कर दूंगा और कुछ परवा न करूंगा| ऐ इब्ने आदम, अगर तू ज़मीन भर के गुनाहों के साथ मुझ से मिले, लेकिन तूने मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न किया हो तो मैं इतनी ही मग्फ़िरत के साथ तुझ से मिलूंगा|

इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है, और कहा: ये हदीस हसन सहीह है|

[हसन]

[1] الترمذي [٣٥٤٠] (ترمذي الضياء) عن أنس. [صحيح الجامع ٤٣٣٨] (حسن)